केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-227 107 उ.प्र.(भारत)
Central Institute for Subtropical Horticulture
Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-227 107 U.P. (India).

24.01.2011

प्रेस विज्ञप्ति

आम के पुराने एवं अनुत्पादक बागों का जीर्णोद्धार

अन्य फल वृक्षों की तरह आम के वृक्ष भी एक निश्चित आयु के बाद कम उपज देने लगते हैं और आर्थिक द्रष्टि से अनुपयोगी हो जाते हैं। वृक्षों की यह स्थिति स्वााभाविक रूप से आने के साथ ही साथ कई अन्य कारण भी होते हैं जो कि वृक्षों को इस अवस्था में शीघ्र पहुचाने में सहायक होते हैं। भारत में आम की औसत उत्पादकता 5.5 टन प्रति हेक्टर है जो कि बहुत कम है।

ऐसा देखा गया है कि 45 से 50 वर्ष बाद आम के वृक्षों का फैलाव काफी बढ जाता है और वृक्षों की शाखायें बढकर दूसरे पेडों को छूने लगती हैं फलस्वरूप सूर्य का प्रकाश वृक्षों के पर्णीय भागों में पर्याप्त मात्रा में नहीं पहुंच पाता है। जिसके अभाव में प्रकाश संश्लेषण की किया क्षीण हो जाती है, फलस्वरूप कल्ले (प्ररोह) पतले और अस्वस्थ हो जाते हैं जो कि पुष्पन एवं फलन हेतु अनुपयोगी होते हैं। यही नही, बल्कि ऐसे बागों में कीट एवं व्याधियों का प्रकोप भी अध्कि होता है जिनका नियंत्रण कर पाना कठिन हो जाता है और बाग उत्पादन की दृष्टि से अनुपयुक्त हो जाते हैं। ऐसे वृक्षों की सामयिक एवं वांछित कटाई–छटाई (कृन्तन) करके बागों को पुनः उत्पादक बनाया जा सकता है। आवश्यक कटाई–छटाई करने के उपरान्त नये कल्लों का सृजन होता है तथा जिससे वृक्षों के ढांचे में आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता है। जिससे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया सुदृढ़ हो जाती है और वृक्षों में पुष्पन व फलत क्षमता बढ़ जाती है।

<u>**पुराने बागों का जीर्णोद्धार**</u> : व्यापक स्तर पर पुराने एवं अनुत्पादक बागों को समूल निकाल कर नए बाग स्थापित करना दीर्घकालीन एवं खर्चीला विकल्प होगा। केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के द्वारा विकसित जीर्णोद्धार तकनीक अपनाकर आम के पुराने बागों को पुनर्यौवन प्रदान किया जा सकता हैं और गुणवत्तायुक्त उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। आर्थिक एवं परिस्थितिकीय दृष्टिकोण से यह तकनीक बागवानों के लिए प्रभावी एवं लाभकारी है।

जीर्णोद्धार प्रक्रिया के दौरान ऐसा देखा गया है कि कृन्तित वृक्षों की सामायिक एवं उचित देख–रेख के अभाव में कभी–कभी तना भेदक कीट से वृक्ष ग्रसित हो जाते हैं,। अतः सुझाव दिया जाता है कि बागवान विशेषकर इस कीट के प्रति अवश्य सजग रहें और कम से कम दो वर्ष तक कृन्तित वृक्षों का सामयकि एवं सघन प्रबन्धन करें।

कटाई–छँटाई : पुराने, घने एवं आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी वृक्षों की सभी अवांछित शाखाओं को पहले चिन्हित कर लेते हैं फिर दिसम्बर.–जनवरी माह में चिन्हित शाखाओं को भूमि सतह से लगभग 2.5 से 3 मीटर की ऊंचाई पर आरी से कटाई करते हैं। कटाई के लिए शक्ति चालित आरी अधिक उपयुक्त है। सूखी, रोग ग्रसित एवं पेड़ों के बीच की घनी शाखाओं को काटकर निकाल देते हैं। पर्णीय क्षेत्र के विकास के लिये पेड़ पर मात्र 3 से 4 कृन्तित शाखायें ही रखते है। जीर्णोद्धार हेतु बाग के वृक्षों की कटाई एक साथ करते हैं।
कृन्तन करते समय सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि शाखायें अनावश्यक रूप से निचले भाग से फट न जाये। अतः पहले आरी से नीचे की तरफ लगभग 15–20 से.मी. कटाई कर, फिर टहनी के ऊपरी भाग से कृन्तन करते हैं। इसके बाद फरवरी माह के मध्य में वृक्षों के तनों के पास थाले एवं सिंचाई की नालियां अवश्य बना देनी चाहिए।

अन्तः फसलें कटाई–छंटाई के बाद कृन्तित वृक्षों के दोनों तरफ काफी खुली जगह मिल जाती है, जिसमें अन्तःफसलें लेकर अतिरिक्त आमदनी अर्जित की जा सकती है। जायद में तरोई, लौकी, खीरा, लोबिया और रबी के मौसम में फूलगोभी, आलू, पातगोभी, गेंदा इत्यादि फसलें प्रारम्भिक पॉच वर्ष तक लेना लाभदायक पाया गया है।

इस प्रकार कटी लकड़ियों की बिक्री व बाग में अन्तःफसलें लेकर अर्जित आमदनी से प्रारम्भिक क्षति पूर्ति हो जाती है।

पोषण एवं जल प्रबन्धन कटाई के बाद प्रति वृक्ष 2.5 कि.ग्रा. यूरिया, 3•00 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट एवं 1.5 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा और यूरिया की आधी मात्रा फरवरी के अन्त में थालों में डालते हैं। तत्पश्चात् जून माह के अन्त में शेष यूरिया की आधी मात्रा देते हैं। इसके अतिरिक्त जुलाई के प्रथम सप्ताह में 50 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद प्रति वृक्ष डालना लाभदायक होता है। उपरोक्त उर्वरकों की मात्रा प्रतिवर्ष दी जाने की संस्तुति की जाती है। उर्वरक डालने के पूर्व थालों की अच्छी प्रकार से निराई–गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए। वृक्षों की सिंचाई मध्य मार्च से मानसून आने तक 10–12 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए ताकि शाखों की वृद्धि अच्छी हो सके और नव–सृजित कल्ले नमी के अभाव में सूखने न पाये। अप्रैल से जून माह तक नमी को संचित रखने के लिए आम या केला की पत्ती, सूखी घास अथवा पुवाल थालों में बिछाना (मल्चिंग) चाहिए।

सृजित कल्लों का विरलीकरण दिसम्बर महीने में हुए कृन्तन के लगभग तीन–चार माह उपरान्त (मार्च–अप्रैल) इन छांटे गए शाखाओं पर बाहुल्यता में नये कल्ले निकलते हैं, जिनका वांछित विरलीकरण आवश्यक है। स्वस्थ कल्लों युक्त खुले पर्णीय क्षेत्र के विकास के लिए शाखाओं के बाहरी ओर 8–10 स्वस्थ कल्ले प्रति शाख रखकर शेष अवांछित कल्लों को जून एवं अगस्त में हटा दिया जाता है। अप्रैल–मई माह में नयी पत्तियों पर पत्ती खाने वाले कीट से बचाव हेतु कार्बरिल 3 ग्रा/ली. का छिड़काव करना चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबन्धन कटाई के बाद तना भेदक कीट से बचाव हेतु तनों पर कार्बरिल चूर्ण का बुरकाव कर देना चाहिए। समुचित देख–रेख के अभाव में कृन्तित वृक्ष तनाभेदक कीट से ग्रसित हो जाता है इस परिस्थिति में कीट द्वारा बनाए सुराख में लोहे की पतली तीली डालकर कीड़ों को निकाल कर नष्ट कर देना चाहिये। साथ ही कीटनाशी दवा

डाइक्लोरवास (डी.डी.वी.पी) में भीगे रूई के फाहों को छेद में रखकर गीली मिट्टी से बन्द कर देते हैं। इस प्रकार इस कीट का नियंत्रण किया जा सकता है। नई पत्तियों को एन्थ्रेक्नोज रोग से बचाव हेतु कॉपर हाइड्राक्साइड (0.3%), 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर 12–15 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करना चाहिए।

पुष्पन एवं फलन कटाई–छटाई के उपरांत वृक्षों की सघन एवं सामयिक देखभाल करने से कृन्तित शाखाओं पर सृजित कल्ले लगभग दो वर्ष उपरान्त पुष्पन एवं फलन में आने लगते हैं। प्रयोगों के आधार पर पाया गया कि कृन्तित वृक्षों से गुणवत्तायुक्त आम की औसतन 60 – 70 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष उपज प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार जीर्णोद्धार विधि द्वारा पुराने एवं अनुत्पादक आम के बाग 20–25 वर्ष के लिये पुनः लाभदायक हो जाते हैं।

बागवानों के लिए सलाहः जिन बागवानों को ऐसा लगता है कि उनके बाग अनुत्पादक हैं तथा उनको जीर्णोद्धार की आवश्यकता है वो अपने जनपद के जिला उद्यान अधिकारी से सम्पर्क करके इस कार्य को करवा सकते हैं। जीर्णोद्धार तकनीक से सम्बंधित किसी भी जानकारी के लिए केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ (0522–2841082, 2841023) से भी सम्पर्क किया जा सकता है।

आम का घना एवं अनुत्पादक बाग	वृक्षों में गहरी कटाई
कटाई उपरान्त बाग का दृश्य	अन्तः फसलन द्वारा अतिरिक्त आमदनी
तनाभेदक कीट	तीसरे वर्ष से भरपूर फलत